LANCET PRESS RELEASE

PLEASE NOTE UNUSUAL EMBARGO: 0730AM UK time (1200H Noon New Delhi time, 0130AM Toronto time) Tuesday 24 May 2011

पहले की तुलना में और अधिक भारतीय परिवार लड़कियों का चुनिंदा गर्भपात करवा रहे हैं ताकि परिवार में कम से कम एक लड़का अवश्य हो।

ध्यान दें कि नई दिल्ली, भारत में इस विषय पर पत्रकार सम्मेलन है, कृप्या नीचे देखें

एक नए अनुसंधान जो ऑनलाइन और फिर 'द लांसेट' में प्रकाशित हुआ है, में इस बात की पुष्टी की गयी है कि भारत में ज्यादा से ज्यादा परिवार जिनकी पहली सन्तान लड़की है, अपना दूसरा गर्भपात करा लेते हैं, यदि उनको जाँच में लड़की होने का पता चल जाता है। इस तरह वो अपने परिवार में कम से कम एक लड़के का जन्म सुनिश्चित कर लेते हैं। अशिक्षित और गरीब परिवारों के बजाय शिक्षित और समृद्ध परिवारों में लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या में ये गिरावट ज्यादा हुई है। आज भारत के ज्यादा से ज्यादा लोग ऐसे प्रदेशों में रहते है जहाँ लड़कियों का गर्भपात एक आम बात हो गई है। इस अनुसंधान में सेंटर फॉर ग्लोबल हेल्थ रिसर्च, डल्ला लाना स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा के प्रोफेसर प्रभात झा और भारत में उनके कई सहयोगी भी शामिल है जिनमें भारत के पूर्व रजिस्ट्रार–जेनेरल डॉ. जयन्त के बांथिया का नाम उल्लेखनीय है।

2011 कि भारतीय जनगणना से पता चलता है कि 0–6 वर्ष की आयु वर्ग में लड़कों की तुलना में 71 लाख लड़कियाँ कम हैं, ये एक चौंका देने वाली संख्या है जो कि 2001 की जनगणना में 60 लाख थी और 1991 में सिर्फ 42 लाख थी। इस अध्ययन में, लेखकों ने चुनिंदा गर्भपातों की वास्तविक संख्या का पता लगाने के लिये जनसंख्या के आंकड़ों का विश्लेषण किया और ऐसे परिवार जिनमें पहली संतान लड़की थी, दूसरी संतान के लिये लड़के लड़कियों के लिंग अनुपात का अंतर पता करने के लिये राष्ट्रीय सर्वेक्षणों द्वारा प्राप्त 250,000 जन्मों की जाँच की।

उन्होंने पाया कि 1990 में 1000 लड़कों के अनुपात में 906 लड़कियाँ जो 2005 में गिरकर 836 रह गई हैं, यह गिरावट 0.5 प्रतिशत का वार्षिक दर दिखाती है। यह गिरावट अशिक्षित एवं गरीब परिवारों की तुलना में 10 वीं पास या उससे अधिक शिक्षित महिलाओं एवं समृद्ध परिवारों में ज्यादा पायी गई है। यदि पहली संतान बेटा है तो इस स्थिती में लिंग अनुपात में कोई गिरावट नहीं पायी गयी है।

लड़कियों में अतिरिक्त मृत्यु दर के समायोजन के बाद भी लेखकों ने पाया कि लड़कियों के चुनिंदा गर्भपात की संख्या की सीमा का अनुमान 1980 के दशक में 0–2.0 लाख, 1990 के दशक में 12 से 41 लाख और 2000 के दशक में 31 से 60 लाख तक बढ़ गई है। 0–6 वर्ष के बच्चों में लिंग अनुपात के हर एक प्रतिशत गिरावट का मतलब 12 से 36 लाख लड़कियों का चुनिंदा गर्भपात होता है। पिछले तीन दशकों में (1980 से 2010 तक) करीब 40 से 120 लाख लड़कियों का चुनिंदा गर्भपात भारत में किया जा चुका है।

2001 से 2011 की जनगणनाओं के दौरान लेखकों ने इस बात का उल्लेख किया है कि ऐसे जिले, जिनमें बच्चों के लिंग अनुपात में गिरावट आई है उन जिलों की संख्या बढ़कर दुगूनी हो गई है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार ने 1996 में प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण कर गर्भपात कराने की तकनीक का दुरूपयोग रोकने के लिये Pre-Natal Diagnostic Techniques (PNDT) Act लागू किया। हालांकि उन्होंने यह स्वीकार किया है कि यह एक्ट पूरे देश में प्रभावी रूप से लागू नहीं हो रहा है।

लेखक निष्कर्ष निकालते है किः ''महिला भ्रूण की चुनिंदा गर्भपात में कुछ दशकों में वृद्धि हुई है, खासतौर पर यदि पहली संतान लड़की है और इसने शिषु के लिंग अनुपात के असंतुलन को बढ़ाने में योगदान किया है। भारत के प्रत्येक जिलों में संतान क्रम के अनुसार लिंग अनुपात की विश्वषनीय निगरानी एवं विवरण, लड़कियों के चुनिंदा गर्भपात के असाधारण वृद्धि की रोकथाम में कारगर साबित हो सकती है।

समाप्त

पत्रकार सम्मेलन के लिये प्रोफेसर प्रभात झा 24 मई को भारत में रहेंगे (विवरण नीचे) भारतीय मीडिया जानकारी के लिये कृपया सुश्री प्रभा सती को संपर्क करें मोबाइल (+91) 9711964550, ईमेल– satip@smh.ca. उत्तरी अमेरिका और अन्य मीडिया जानकारी के लिये कृपया सुश्री एन्स्ली वोंग को संपर्क करें मोबाइल (+1) 4166621347, email wongans@smh.ca.

Twitter: @CGHR_org

पूरे लेख के लिये नीचे देखें

http://www.thelancet.com/journals/lancet/article/PIIS0140-6736(11)60649-1/abstract

सामग्री/जानकारी के लिए

अतिरिक्त जानकारीः प्रेस विज्ञप्ति अंग्रेजी और हिन्दी में, वीडियो समाचार विज्ञप्ति अंग्रेजी और हिन्दी में, सामान्यतः पूछे जाने वाले प्रश्न, स्लाइड, www.cghr.org/girls पर उपलब्ध हैं।

पत्रकार सम्मेलन

तारीखः मंगलवार, 24 मई 2011, 11:30 बजे से 13:30, नई दिल्ली समयानुसार

स्थानः ताज महल होटल,

कमराः दीवान ए खास, 1 मानसिंह रोड, नई दिल्ली, भारत

पैनलः श्रीमती शैलजा चंद्रा, पूर्व कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरता कोष, पूर्व सचिव, भारत सरकार, नई दिल्ली, भारत

प्रोफेसर प्रभात झा, निदेशक सेंटर फॉर ग्लोबल हेल्थ रिसर्च, टोरंटो विष्वविद्यालय टोरंटो, कनाडा

प्रोफेसर राजेश कुमार, प्रमुख स्कूल ऑफ़ पब्लिक हेल्थ, पोटस्ग्रेजुएट इंस्टिटयूट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़, भारत

आमंत्रण के लिए संपर्क करें सुश्री प्रभा सती (उपरोक्त देखें)